साना-साना हाथ जोड़ि

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» लेखिका मधु कांकरिया – परिचय और लेखन दृष्टि

» पृष्ठभूमि, शीर्षक और केंद्रीय विषय

» मुख्य पात्र-प्रसंग – नार्गे, पहाड़ी औरतें और बच्चे

» लेखकीय शैली – बिंब, संवेदना और विरोधाभास

» संदेश और नैतिक मूल्य – सौंदर्य, श्रम और संतुलन

» आज के विद्यार्थी जीवन से जुड़ाव

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मधु कांकरिया को इस पाठ की उपयुक्त लेखिका क्यों माना जा सकता है? दो बिंदु लिखिए।

› उनकी यात्रा-लेखन और सामाजिक संवेदना याद करो

› पाठ में प्रकृति के साथ श्रम/आम जीवन जोड़ने की क्षमता जोड़ो

› दोनों बिंदुओं को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखो

उत्तर – (1) वे यात्रा में केवल स्थल नहीं, सुंदरता और मानव-संघर्ष दोनों देखती हैं। (2) उनकी भाषा संवेदनशील है, जिससे हिमालय का अनुभव जीवन-दर्शन बन जाता है।

उदाहरण 2. पाठ का शीर्षक 'साना-साना हाथ जोड़ि...' क्यों सार्थक है? संक्षेप में लिखिए।

› शीर्षक की उत्पत्ति बताओ – नेपाली युवती से सीखी प्रार्थना

› अर्थ जोड़ो – छोटे हाथ जोड़कर जीवन को अच्छाई के लिए समर्पित करना

› निष्कर्ष में लिखो कि शीर्षक पाठ के विनम्र, संवेदनशील और नैतिक भाव को पकड़ता है

उत्तर – शीर्षक उस नेपाली प्रार्थना से आया है जिसमें जीवन को अच्छाइयों के प्रति समर्पित करने की कामना है। यह पाठ के विनम्र भाव, आंतरिक शुद्धि और संवेदनशीलता को व्यक्त करता है, इसलिए सार्थक है।

उदाहरण 3. पहाड़ी औरतों का प्रसंग पाठ में क्यों महत्त्वपूर्ण है? तीन बिंदु लिखिए।

› प्रसंग याद करो – बच्चे बाँधे पत्थर तोड़ना/सड़क बनाना

› विरोधाभास जोड़ो – स्वर्गीय सौंदर्य के बीच दैन्य और खतरा

› संदेश निकालो – आम जनता जीवन का प्रतिसंतुलन है; श्रम का सम्मान

उत्तर – (1) यह प्रसंग सौंदर्य के बीच कठोर यथार्थ दिखाता है। (2) मातृत्व और श्रम साथ-साथ चलते दिखते हैं। (3) इससे पाठ का संदेश उभरता है कि विकास और यात्रा उन हाथों पर टिकी है जो कम लेकर अधिक देते हैं।

उदाहरण 4. लेखिका की शैली की दो विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

› पहली विशेषता: चित्रात्मक बिंब/उपमा चुनो

› दूसरी: संवेदना या विरोधाभास चुनो

› दोनों को छोटे उदाहरण के साथ लिखो

उत्तर – (1) चित्रात्मक बिंब – रात के नगर को बिखरे तारों/झालर जैसा दिखाना। (2) विरोधाभास – सौंदर्य-समाधि तोड़कर पत्थर तोड़ती महिलाओं का यथार्थ प्रस्तुत करना।

उदाहरण 5. पाठ का मुख्य संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

› प्रकृति-सौंदर्य वाले भाव को एक वाक्य में लिखो
› श्रमशील आम जनता वाले भाव को जोड़ो
› दोनों को मिलाकर संतुलन/संवेदना का निष्कर्ष दो

उत्तर – पाठ कहता है कि हिमालयी सौंदर्य जीवन को आनंदित करता है, पर सच्ची संपूर्णता तब है जब हम उन मेहनतकश लोगों और प्रकृति की लय का भी सम्मान करें जिनके बल पर यह यात्रा और विकास संभव हैं।

उदाहरण 6. इस पाठ से विद्यार्थी जीवन के लिए दो व्यावहारिक सीख लिखिए।

› एक सीख यात्रा/देखने की आदत से निकालो
› दूसरी सीख श्रम या पर्यावरण से निकालो
› दोनों को अपने दैनिक व्यवहार से जोड़कर लिखो

उत्तर – (1) घूमते समय केवल दृश्य नहीं, मेहनतकश लोगों को भी देखना और उनका सम्मान करना। (2) प्रकृति की लय न बिगाड़ना – कचरा कम करना, संसाधन बचाना – और सहपाठियों की मेहनत को हल्के में न लेना।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- लेखिका-परिचय में जन्म-स्थान + विधा + 'सौंदर्य के साथ श्रम/समाज देखना' अवश्य लिखो।
- केंद्रीय विषय वाले उत्तर में 'केवल सौंदर्य नहीं' और 'श्रम/आम जनता' दोनों वाक्य अवश्य लाओ।
- पात्र/प्रसंग वाले उत्तर में नाम के साथ एक वाक्य 'पाठ में इनका क्या काम है' अवश्य जोड़ो।
- शैली वाले उत्तर में कम से कम एक उपमा और एक विरोधाभासी प्रसंग नाम लेकर लिखो।
- संदेश वाले उत्तर का अंतिम वाक्य हमेशा 'इसलिए हमें...' से खत्म करो – मूल्य स्पष्ट हो जाता है।
- प्रासंगिकता वाले उत्तर में कम से कम एक निजी/स्कूल उदाहरण दो – इससे उत्तर जीवंत लगता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› जन्म 1957 राजस्थान; विधा यात्रा-वृत्तांत; दृष्टि – सौंदर्य + सामाजिक यथार्थ।
› गैंगटॉक-यूमथांग; शीर्षक = नेपाली प्रार्थना; विषय = सौंदर्य + श्रम-संतुलन।
› नार्गे = गाइड-दृष्टि; औरतें = श्रम+जोखिम; बच्चे = दूरी+मेहनत।
› B-S-V: बबि, संवेदना, वरिोधाभास – शैली के तीन स्तंभ।
› सौंदर्य + श्रम-सम्मान + प्रकृति-संतुलन = पाठ का नैतिक सार।
› देखो+सम्मान करो+अच्छाई चुनो+प्रकृति बचाओ – चार व्यावहारिक सीख।